B.Com (Hons)
P.— A/c & finance (H)
Paper- I
Financial Accounting
Date- 30.05.2020

प्रो० सतीन्द्र कुमार
सहायक, प्राध्यापक,
वाणिज्य विभाग
V.S.J. महाविद्यालय
राजनगर (मधुबनी)

UNIT – II

TOPIC – BRANCH AND DEPARTMENT ACCOUNT

A. BRANCH ACCOUNT

सामान्यतः व्यापारिक संस्थाओं द्वारा अपने माल की विभिन्न स्थानों पर बिक्री करने के लिए शाखाएँ खोली जाती हैं. ये शाखाएँ देश तथा देश के बाहर विभिन्न स्थानों में खोली जा सकती हैं. शाखाओं के संबंध में जो खाते प्रधान कार्यालय की पुस्तकों में शाखाओं के खाते खोले जाते हैं उन्हें शाखा खाता (Branch Account) कहा जाता है. ये खाते प्रायः शाखाओं की कार्यक्षमता तथा उनकी लाभदायकता ज्ञात करने के उद्देश्य से बनाये जाते हैं.

व्यापारिक संस्थाओं द्वारा शाखा खाते का निर्माण निम्नलिखित उद्देश्यों की पूर्ति के लिए किया जाता है:—

— (i) प्रत्येक शाखा का अलग-2 लाभ-या हानि ज्ञात करने।

— (ii) शाखाओं पर नियंत्रण रखने हेतु उचित कदम उठाने के लिए।

— (iii) प्रधान कार्यालय से संबंधित लेखे तथा शाखाओं के लेखे द्वारा व्यवसाय की वास्तविक स्थिति का पता लगाने।

— (iv) माल संबंधी आवश्यकता एवं रोकड़ संबंधित कठिनाइयों का पता लगाने।

— (v) अधिनियमों के तहत शाखाओं के लेखे रखना एवं अंकेक्षण (Audit) कराने हेतु।

Scanned with CamSc

शाखाओं के प्रकार

शाखायें प्रायः तीन प्रकार की होती हैं :—

(1) आश्रित शाखायें (Dependent Branches) :— ऐसी शाखायें जिन्हें बेचने के लिए सब माल, रोकड़ों की पूर्ति, संचालन संबंधी खर्चें आदि सब प्रधान कार्यालय द्वारा भेजा जाता है, उन्हें आश्रित शाखाएं कहा जाता है। ऐसी शाखाओं के लिए नीतियों का निर्धारण प्रधान कार्यालय द्वारा ही निर्धारित की जाती है। ये शाखायें ज्यादातर नकद में माल बेचती हैं। शाखा के लिए आवश्यक संपत्तियों का क्रय प्रधान कार्यालय द्वारा किया जाता है, तथा संपत्तियों के बेकार होने पर उनकी बिक्री प्रधान कार्यालय के द्वारा ही किया जाता है।

(2) स्वतंत्र शाखायें (Independent Branches) :— ऐसी शाखायें जिन्हें माल बिक्री हेतु प्रधान कार्यालय द्वारा ही भेजा जाता है, लेकिन उन्हें इस बात की स्वतंत्रता रहती है कि आवश्यकता पड़ने पर माल स्वयं क्रय कर लें तथा उसके संबंध में उचित खर्च करें उन्हें स्वतंत्र शाखायें कहा जाता है। ये शाखायें बिक्री की राशि को समयानुसार प्रधान कार्यालय को भेजती हैं तथा खर्च संबंधी लेखा पुस्तकें रखती हैं। ये वर्ष के अंत में तलपट का निर्माण कर प्रधान कार्यालय को भेज देती हैं, जिसका समायोजन संबंधी लेखा प्रधान कार्यालय के द्वारा की जाती है। इन शाखाओं के द्वारा व्यापारिक खाता, लाभ-हानि खाता एवं आर्थिक चिट्ठा बनाया जाता है।

(3) विदेशी शाखायें (Foreign Branches) :— ऐसी शाखायें जो विदेशों में स्थापित की जाती हैं, तथा लेखा विदेशी मुद्रा में करती हैं, उन्हें विदेशी शाखायें कहा जाता है। ये सामान्यतः स्वतंत्र शाखाओं की तरह होते हैं तथा लेखा पुस्तकें स्वयं रखते हैं। एक निश्चित अवधि के पश्चात् तलपट का निर्माण कर प्रधान कार्यालय को भेज देते हैं जहाँ प्रधान कार्यालय

Scanned with CamSc

देश की प्रजा में परिवर्तित कर समाजवाद का कार्य करती है।

(B) DEPARTMENTAL ACCOUNTS
विभागीय खाते

वर्तमान में दीर्घस्तरीय फुटकर व्यापार का प्रचलन दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही जा रहा है। बड़े-2 व्यवसायों को सुचारु रूप से चलाने के लिए उन्हें कई भागों में बाँट दिया जाता है; जिनमें से प्रत्येक भाग को विभाग कहा जाता है। इन विभागों के द्वारा लेखा-जोखा इस प्रकार रखा जाता है कि उस विभाग का लाभ-या हानि प्रकट हो सके। इन विभागों की देखभाल व संरक्षण के लिए एक अलग मैनेजर को नियुक्त किया जाता है जिसका कार्य प्रबंध के अतिरिक्त विभिन्न विभागों में समन्वय स्थापित करना भी होता है।

दीर्घस्तरीय व्यापार का बहुत से विभागों में बाँट दिया जाना तथा इन विभागों के संबंध में जो खातों का निर्माण किया जाता है उसे विभागीय खाते कहा जाता है। ये खाते एक निश्चित अवधि के लिए बनाये जाते हैं। जिसका मुख्य उद्देश्य प्रत्येक विभाग की लागत एवं लाभ-हानि ज्ञात करना होता है।

:- विभागीय खाते से लाभ :-

(i) लाभ-हानि का पता लगाना।

(ii) कार्य कुशलता में वृद्धि करने में सहायक होना

(iii) व्यवसाय की उन्नति करने हेतु नीतियों का निर्धारण करने में सहायक होना।

(iv) विभागों के लाभों का तुलनात्मक अध्ययन कर लाभ बढ़ाने में सहायक होना।

(v) व्यवसाय की वास्तविक स्थिति का पता लगाना।

Scanned with CamSc

शाखाओं एवं विभागों में अंतर

आधार	शाखाएँ	विभागों
1. स्थान	ये नगर के विभिन्न स्थानों में स्थित होते हैं	जबकि यह एक ही छत के नीचे विभिन्न विभाग में स्थित होते हैं।
2. उद्देश्य	इसका उद्देश्य ग्राहकों के नजदीक पहुँचना तथा बिक्री बढ़ाना होता है।	जबकि इसका उद्देश्य व्यवसाय की कार्यक्षमता बढ़ाने व कार्य को प्रभावी रूप से संचालन करना होता है।
3. प्रबंध	शाखा के प्रबंध के लिए मैनेजर की नियुक्ति की जाती है जो केवल उसी शाखा के लिए उत्तरदायी होता है।	जबकि प्रत्येक विभाग का एक अध्यक्ष होता है जो विभाग के लिए उत्तरदायी होता है।
4. निर्भरता	शाखाएँ एक दूसरे पर निर्भर नहीं होती हैं।	जबकि विभाग प्रायः एक दूसरे पर निर्भर हो सकते हैं,
5. स्वभाव	शाखाएँ देशी एवं विदेशी दोनों प्रकार की हो सकती हैं।	जबकि विभाग सदैव देशी होता है।
6. वैधानिक आवश्यकता	कंपनी अधिनियम 2013 द्वारा रजिस्टर्ड कंपनियों की शाखाओं का लेखांकन व अंकेक्षण अनिवार्य कर दिया गया है।	जबकि विभागों के लिए किसी अधिनियम द्वारा लेखांकन व अंकेक्षण अनिवार्य नहीं है।
7. स्वतंत्रता	शाखाओं में कुछ शाखाएँ स्वतंत्र हो सकती हैं	जबकि विभाग स्वतंत्र नहीं होते हैं।

Scanned with CamSc